

## शिव स्तुति

जय राम रमारमनं समनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ।  
 अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥  
 दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि भहा भहि भूरि रुजा ।  
 २४नीचर बृद्ध पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥  
 भहि भंडल भंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग भरं ।  
 भद्र भोह भहा भमता २४नी । तमपुज दिवाकर तेज अनी ॥  
 भनजत किरात निपात किए । भूग लोग कुभोग सरेन हिए ।  
 हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिख्या बन पावंर भूलि परे ॥  
 भहु रोग बियोगान्हि लोग हिए । भवदंघि निरादर के फ़िल ए ।  
 भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेमन जे करते ॥  
 अति दीन भलीन दुःखी नितहीं । बिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं ।  
 अवलंब भवंत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥  
 नहिं राग न लोभ न मान भहा । तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा ।  
 एहि ते तव सेवक होत भुदा । मुनि त्यागत जेग भरोस सदा ॥  
 करि प्रेम निरंतर नेम लिए । पद पंकज सेवत सुद्ध हिए ।  
 सम भानि निरादर आदररही । सब संत सुझी बिचरंति भही ॥  
 मुनि भानस पंकज भूंग भजे । रघुभीर भहा रनधीर अजे ।  
 तव नामजपामि नभामि हरी । भव रोग भहागह मान अरी ॥  
 गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनभामि निरंतर श्रीरमनं ।  
 रघुनंद निंदृष्ट दंदृष्टनं । भहिपाल बितोक्य दीनजनं ॥  
 बार बार भर भागउ हरिषि देहु श्रीरंग ।  
 पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥